

कविता का सारांश

‘झाँसी की रानी’ कविता में कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान ने 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई के साहस, देशभक्ति और बलिदान का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण किया है।

कविता की शुरुआत 1857 की क्रांति के वातावरण से होती है, जब पूरे भारत में अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह की भावना जाग उठी थी। रानी लक्ष्मीबाई बचपन से ही साहसी, निडर और युद्ध-कला में निपुण थीं। वे तलवारबाज़ी, घुड़सवारी और युद्ध-नीति में दक्ष थीं और वीर शिवाजी की कहानियों से प्रेरणा लेती थीं।

विवाह के बाद वे झाँसी की रानी बनीं, लेकिन जल्द ही उनके पति की मृत्यु हो गई और अंग्रेजों ने ‘लैप्स की नीति’ के तहत झाँसी पर अधिकार करने का प्रयास किया। रानी ने अन्याय के सामने झुकने से इनकार कर दिया और अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया।

1857 की क्रांति में रानी लक्ष्मीबाई ने अद्भुत वीरता का परिचय दिया। उन्होंने झाँसी की रक्षा के लिए साहसपूर्वक युद्ध किया और बाद में कालपी तथा ग्वालियर तक संघर्ष जारी रखा। अंततः युद्ध करते हुए वे वीरगति को प्राप्त हुईं, लेकिन उनका बलिदान अमर हो गया।

कविता के अंत में कवयित्री कहती हैं कि रानी लक्ष्मीबाई का साहस और बलिदान सदा भारतीयों के हृदय में जीवित रहेगा। वे स्वतंत्रता, वीरता और नारी-शक्ति की महान प्रतीक हैं।

कविता का संदेश:-

- यह कविता हमें साहस, देशप्रेम, त्याग और नारी-सशक्तिकरण का संदेश देती है।

शब्दार्थ:

- |  |   |
|--|---|
| • भृकुटी तानी — गुस्से में भौंहे चढ़ाना      | • अवतार — देवता का मनुष्य रूप में जन्म लेना |
| • फिरंगी — अंग्रेज़, विदेशी शासक             | • दुर्ग — किला, गढ़                         |
| • हरबोले — वीरता की कहानियाँ सुनाने वाले लोग | • व्यूह — युद्ध की योजना या रणनीति          |
| • मर्दानी — बहादुर, पुरुषों जैसी वीरता वाला  | • सुभट — बहादुर योद्धा                      |
| • छबीली — सुंदर, सजीला, तेजस्वी              | • विरुदावली — यशोगान, प्रशंसा के गीत        |
| • बरछी — छोटा भाला                           | • कालगति — समय का प्रभाव या परिवर्तन        |
| • ढाल — प्रहार से बचाने वाला अस्त्र          | • विधि — भाग्य, ईश्वर की व्यवस्था           |
| • कृपाण — तलवार                              | • विधवा — जिसका पति मर चुका हो              |
| • कटारी — छोटा तेज़ हथियार (छुरी जैसा)       | • बिरानी / बिराना — उजड़ी हुई, वीरान, पराया |
| • गाथाएँ — कथा, प्रशंसागीत                   | • अनुनय-विनय — विनती, प्रार्थना             |

- बिसात — हैसियत, सामर्थ्य
- निपात — विनाश, पतन, अचानक आक्रमण
- वेदना — दुख, पीड़ा
- बेज़ार — दुखी, ऊबा हुआ
- रण-चंडी — युद्ध की देवी (क्रोधित रूप)
- महायज्ञ — बड़ा कार्य या आंदोलन
- द्वंद्व — दो व्यक्तियों के बीच युद्ध
- सन्मुख — सामने उपस्थित
- विजयी — जीतने वाला
- वीरगति — युद्ध में वीरता से मृत्यु
- कृतज्ञ — उपकार मानने वाला, अहसानमंद
- अविनाशी — जिसका नाश न हो, अमर
- मदमाती — मस्त, उत्साह या घमंड से भरा
- स्मारक — याद में बनाया गया चिन्ह या भवन

## अभ्यास

### रचना से संवाद

#### मेरे उत्तर मेरे तर्क

निम्नलिखित प्रश्नों के सटीक उत्तर चुनिए और यह भी बताइए कि आपको ये उत्तर उपयुक्त क्यों लगते हैं?

1. 'झाँसी की रानी' कविता की पंक्ति "बूढ़े भारत में भी आई फिर से नई जवानी थी" में 'नई जवानी' शब्द किस भाव को व्यक्त करता है?

- (क) देश का स्वाभिमान
- (ख) विद्रोह की चिंगारी
- (ग) स्वाधीनता का भय
- (घ) भारत की युवावस्था

उत्तर: (ख) विद्रोह की चिनगारी

तर्क: यहाँ 'बूढ़ा भारत' गुलामी से थके हुए देश का प्रतीक है, जबकि 'नई जवानी' उस नए जोश, साहस और अंग्रेजों के विरुद्ध उठी क्रांति की भावना को दर्शाती है, जिसने देशवासियों में स्वतंत्रता की आग जगा दी।

2. लक्ष्मीबाई को 'छबीली' कहना उनके व्यक्तित्व की किस विशेषता को दर्शाता है?

- (क) विनम्रता
- (ख) शोभायुक्त
- (ग) सहिष्णुता
- (घ) कठोरता

उत्तर: (ख) शोभायुक्त

तर्क: 'छबीली' शब्द का अर्थ सुंदर, सजीला या प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला होता है। बचपन में लक्ष्मीबाई अत्यंत चपल, सुंदर और युद्ध कलाओं में निपुण थीं, जो उनके व्यक्तित्व को दूसरों से अलग और शोभायुक्त (आकर्षक) बनाता था।

3. "बुझा दीप झाँसी का" पंक्ति का भावार्थ है—

- (क) अंग्रेजों का झाँसी पर अधिकार हो जाना
- (ख) झाँसी राज्य की उम्मीदों का नष्ट हो जाना
- (ग) राजा की आकस्मिक मृत्यु होना
- (घ) रानी के जीवन में उदासी होना

उत्तर: (ग) राजा की आकस्मिक मृत्यु होना

तर्क: राजा को राज्य का दीपक माना जाता है। राजा गंगाधर राव की मृत्यु से झाँसी राज्य अंधकार में चला गया, इसलिए 'दीप बुझना' उनके निधन का संकेत है।

4. "इस स्वतंत्रता-महायज्ञ में कई वीरवर आए काम" पंक्ति में स्वतंत्रता आंदोलन की किस ऐतिहासिक घटना की ओर संकेत किया गया है?

- (क) असहयोग आंदोलन
- (ख) भारत छोड़ो आंदोलन
- (ग) 1857 की क्रांति
- (घ) सविनय अवज्ञा आंदोलन

उत्तर: (ग) 1857 की क्रांति

तर्क: यह कविता सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा सन् 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के संदर्भ में लिखी गई है। पंक्ति में जिन वीरवरों (जैसे नाना धुंधूपंत, ताँतिया आदि) का नाम आता है, वे सभी इसी ऐतिहासिक क्रांति के प्रमुख नायक थे।

5. "व्यापारी बन दया चाहता था जब यह भारत आया" पंक्ति में 'यह' शब्द किसके लिए कहा गया है?

- (क) नवाबों के लिए
- (ख) जनरल डलहौजी के लिए
- (ग) लेफ्टिनेंट वॉकर के लिए
- (घ) ब्रिटिश राज के लिए

उत्तर: (घ) ब्रिटिश राज के लिए

तर्क: अंग्रेज़ (ईस्ट इंडिया कंपनी) प्रारंभ में व्यापारी बनकर भारत आए और धीरे-धीरे उन्होंने यहाँ शासन स्थापित कर लिया। यह पंक्ति उसी ऐतिहासिक प्रक्रिया को दर्शाती है।

### मेरी समझ मेरे विचार

नीचे दिए गए प्रश्नों पर कक्षा में चर्चा कीजिए और उनके उत्तर लिखिए—

1. 'झाँसी की रानी' कविता के आधार पर बताइए कि लक्ष्मीबाई के प्रिय खेल कौन-कौन से थे? उनका बचपन दूसरों से किस प्रकार भिन्न था?

उत्तर: लक्ष्मीबाई के प्रिय खेल युद्ध से जुड़े हुए थे, जैसे—घुड़सवारी करना, तलवार चलाना, बरछी और ढाल का अभ्यास करना, नकली युद्ध खेलना, सेना की व्यूह-रचना करना और शिकार खेलना।

उनका बचपन सामान्य बच्चों से अलग था क्योंकि वे गुड़िया-खेल या घरेलू खेलों में रुचि नहीं लेती थीं। वे बचपन से ही साहसी, निर्भीक और युद्धकला में निपुण थीं। यही कारण है कि उनका बचपन वीरता और पराक्रम से भरा हुआ था।

2. “किंतु कालगति चुपके-चुपके काली घटा घेर लाई” पंक्ति के माध्यम से किस घटना की ओर संकेत किया गया है?

उत्तर: इस पंक्ति के माध्यम से रानी लक्ष्मीबाई के जीवन में आए दुखद समय का संकेत किया गया है। यह घटना उनके पति राजा गंगाधर राव की मृत्यु और उसके बाद आने वाली कठिनाइयों को दर्शाती है। इसके बाद अंग्रेजों ने झाँसी पर अधिकार करने की योजना बनाई, जिससे रानी के जीवन में संकट आ गया।

3. “महलों ने दी आग, झोंपड़ी ने ज्वाला सुलगाई थी” पंक्ति समाज के विभिन्न वर्गों की एकता को दर्शाती है, इस एकता का स्वतंत्रता संग्राम के संदर्भ में क्या महत्व है?

उत्तर: यह पंक्ति समाज के सभी वर्गों—अमीर (महल) और गरीब (झोंपड़ी)—की एकता को दर्शाती है।

स्वतंत्रता संग्राम में इस एकता का बहुत महत्व था क्योंकि जब समाज के सभी लोग एक साथ आए, तभी अंग्रेजों के खिलाफ मजबूत संघर्ष संभव हो सका। इस एकता ने स्वतंत्रता आंदोलन को व्यापक और शक्तिशाली बनाया।

4. “सरे-आम नीलाम छापते थे अंग्रेजों के अखबार” पंक्ति में ‘नीलाम छापते’ शब्द किसकी ओर संकेत करता है? यह भी बताइए कि किसकी नीलामी की जाती थी और क्यों?

उत्तर: ‘नीलाम छापते’ का अर्थ है खुलकर घोषणा करना या प्रचार करना।

यहाँ इसका संकेत इस बात की ओर है कि अंग्रेजों के अखबार भारतीय राजाओं और उनके राज्यों की नीलामी (हड़पने) की खबरें छापते थे। अंग्रेज भारतीय राज्यों को अपने कब्जे में लेकर उन्हें बेचने या अपने शासन में शामिल करने का काम करते थे। इसका उद्देश्य भारत पर अपना पूरा अधिकार स्थापित करना था।

5. “अभी उम्र कुल तेईस की थी, मनुज नहीं अवतारी थी” पंक्ति में ‘अवतारी’ शब्द व्यक्ति के विशेष गुणों की ओर इंगित कर रहा है। कविता के आधार पर बताइए कि लक्ष्मीबाई के किन गुणों के कारण उनको ‘अवतारी’ कहा गया है?

उत्तर: इस पंक्ति में ‘अवतारी’ शब्द लक्ष्मीबाई के असाधारण गुणों को दर्शाता है।

उन्हें ‘अवतारी’ इसलिए कहा गया है क्योंकि उनमें अद्भुत साहस, वीरता, देशभक्ति, नेतृत्व क्षमता और त्याग की भावना थी। वे सामान्य मनुष्य की तरह नहीं थीं, बल्कि देवी के समान पराक्रमी और प्रेरणादायक थीं। उन्होंने कम उम्र में ही महान कार्य किए और देश के लिए अपना बलिदान दिया।

### मेरी समझ मेरे विचार

नीचे दिए गए प्रश्नों पर कक्षा में चर्चा कीजिए और उनके उत्तर लिखिए—

1. कविता में कवि की किस भावना की अभिव्यक्ति मिलती है?

उत्तर: कविता में कवि की देशभक्ति, गर्व और प्रेम की भावना व्यक्त हुई है। कवि भारत की महानता, प्राकृतिक सुंदरता और सांस्कृतिक समृद्धि का वर्णन करते हुए अपने देश के प्रति गहरा सम्मान और लगाव प्रकट करता है।

2. कविता में भारत के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन किस प्रकार किया गया है? क्या आप मानते हैं कि प्रकृति का संरक्षण करना भी देशप्रेम का काम है? क्यों?

उत्तर: कविता में भारत के प्राकृतिक सौंदर्य का बहुत सुंदर चित्रण किया गया है। इसमें हरे-भरे खेत, खिलते हुए कमल, नदियाँ, पर्वत और हिमालय का वर्णन किया गया है। कवि ने भारतभूमि को सोने जैसी उपजाऊ और सुंदर बताया है, जहाँ प्रकृति अपनी पूरी शोभा के साथ उपस्थित है।

हाँ, मैं मानता/मानती हूँ कि प्रकृति का संरक्षण करना भी देशप्रेम का ही एक रूप है। क्योंकि प्रकृति हमारे देश की धरोहर है। यदि हम जंगलों, नदियों, पहाड़ों और पर्यावरण की रक्षा करते हैं, तो हम अपने देश को सुरक्षित और सुंदर बनाए रखते हैं। इसलिए पर्यावरण की रक्षा करना देश के प्रति हमारी जिम्मेदारी है।

3. “कनक-शस्य-कमलधरे!” पंक्ति भारतभूमि की किन-किन विशेषताओं की ओर संकेत कर रही है?

उत्तर: “कनक-शस्य-कमलधरे!” पंक्ति में कवि ने भारतभूमि की समृद्धि और प्राकृतिक सुंदरता का वर्णन किया है—

- कनक (सोना) → भारत की धन-सम्पदा और समृद्धि का प्रतीक
- शस्य (फसल) → उपजाऊ भूमि और कृषि-समृद्धि का संकेत
- कमलधरे (कमल धारण करने वाली) → सुंदरता, पवित्रता और प्राकृतिक सौंदर्य का प्रतीक

इस प्रकार यह पंक्ति बताती है कि भारतभूमि धन-धान्य से सम्पन्न, उपजाऊ और अत्यंत सुंदर है।

4. “मुकुट शुभ्र हिम-तुषार” पंक्ति में हिमालय को भारत का मुकुट बताया गया है, क्यों?

उत्तर: इस पंक्ति में हिमालय को भारत का मुकुट इसलिए कहा गया है क्योंकि—

- हिमालय भारत के उत्तरी भाग में स्थित है, जैसे सिर पर मुकुट होता है।
- इसकी चोटियाँ सफेद बर्फ (हिम-तुषार) से ढकी रहती हैं, जो मुकुट की तरह चमकती हैं।
- यह देश की शान, गौरव और ऊँचाई का प्रतीक है।
- हिमालय भारत की रक्षा भी करता है, इसलिए इसका महत्व और बढ़ जाता है।

इस प्रकार हिमालय अपनी स्थिति, सुंदरता, ऊँचाई और गौरव के कारण भारत का मुकुट कहलाता है।

## विधा से संवाद

### कविता में कहानी

यह कविता लक्ष्मीबाई के जीवन की घटनाओं पर आधारित है और अपनी संरचना में एक कथात्मक कविता है। कथात्मक कविता ऐसी कविता को कहते हैं जिसमें कविता और कहानी के तत्व परस्पर जुड़े होते हैं तथा घटनाओं का एक क्रम होता है। इस कविता में भी लक्ष्मीबाई के बचपन से लेकर वीरगति प्राप्त होने तक की कथा क्रम से देखने को मिलती है। पाठ की संरचना को समझते हुए इसमें वर्णित प्रमुख घटनाओं को समय-रेखा (टाइमलाइन) पर दर्शाएँ।

(संकेत— लक्ष्मीबाई का बचपन, विवाह, अन्य घटनाएँ आदि।)

उत्तर:

## झाँसी की रानी (लक्ष्मीबाई) का जीवन - समय-रेखा



★ खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी। ★

## विषयों से संवाद

### साझा साथ/साझा संघर्ष

1. "लावारिस का वारिस बनकर ब्रिटिश राज्य झाँसी आया", ब्रिटिश राज किस नीति के कारण 'लावारिस का वारिस' बन जाता था? अपने इतिहास के शिक्षक से पता लगाकर उस नीति के विषय में लिखिए।

उत्तर: ब्रिटिश राज 'लैप्स की नीति' (Doctrine of Lapse) के कारण 'लावारिस का वारिस' बन जाता था।

- इस नीति को लॉर्ड डलहौजी ने लागू किया था।
- इसके अनुसार यदि किसी राजा का कोई सगा (जैविक) पुत्र नहीं होता था, तो उसका राज्य अंग्रेज अपने अधीन कर लेते थे।
- दत्तक पुत्र को उत्तराधिकारी मान्यता नहीं दी जाती थी।

इसी नीति के कारण अंग्रेजों ने झाँसी पर कब्ज़ा करना चाहा।

2. इस कविता में लक्ष्मीबाई की जीवन-गाथा के साथ-साथ अनेक वीरों के त्याग और बलिदान का भी उल्लेख है। उनकी सूची बनाइए तथा शिक्षक की सहायता से 1857 की क्रांति में उनके योगदान के विषय में लिखिए।

उत्तर: कविता की पंक्तियों के आधार पर उन प्रमुख वीरों की सूची और 1857 की क्रांति में उनके अमूल्य योगदान का विवरण निम्नलिखित है:

- रानी लक्ष्मीबाई → झाँसी की रक्षा के लिए वीरता से युद्ध किया।
- नाना साहब → कानपुर में अंग्रेजों के खिलाफ नेतृत्व किया।
- तात्या टोपे → कुशल सेनानायक, गुरिल्ला युद्ध में निपुण।
- बेगम हजरत महल → लखनऊ में विद्रोह का नेतृत्व किया।
- मंगल पांडे → क्रांति की शुरुआत करने वाले सैनिक।
- कुंवर सिंह → बिहार में अंग्रेजों से संघर्ष किया।

इन सभी वीरों ने देश की स्वतंत्रता के लिए बलिदान और संघर्ष किया।

3. यह कविता जिस समय और परिवेश में लिखी गई है, उसमें युद्ध और अन्य साहसिक कार्य करना सामान्यतः पुरुषों का क्षेत्र माना जाता था। वर्तमान में लगभग हर क्षेत्र में महिलाएँ कार्य कर रही हैं। नीचे कुछ ऐसे ही कार्यक्षेत्र दिए गए हैं। इन क्षेत्रों में काम करने वाली स्त्रियों के नाम और उनके विषय में लिखिए। आप चाहें तो इसमें अपनी समझ के अनुसार कुछ और कार्यक्षेत्र भी जोड़ सकते हैं।

कार्यक्षेत्र
1. दमकल केंद्र (फायर ब्रिगेड)
2. रेलगाड़ी चालक
3. खेल के विभिन्न क्षेत्र
4. व्यापार और प्रबंधन
5. विज्ञान और तकनीक

उत्तर:

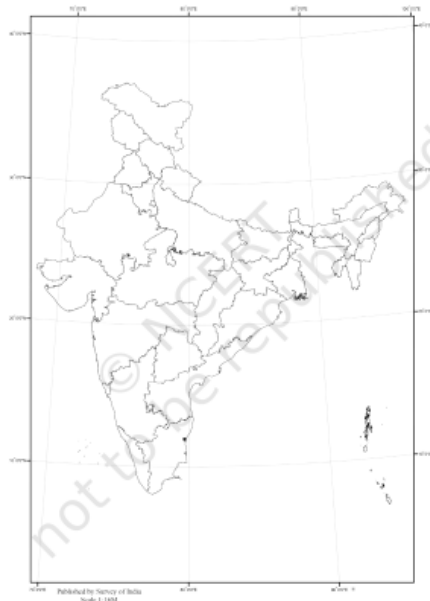
विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत महिलाएँ:

- दमकल केंद्र (फायर ब्रिगेड) - हर्षिनी कन्हेकर → भारत की पहली महिला फायर इंजीनियर, जिन्होंने इस क्षेत्र में महिलाओं के लिए रास्ता खोला।
- रेलगाड़ी चालक - सुरेखा यादव → भारत की पहली महिला ट्रेन ड्राइवर (लोको पायलट), जिन्होंने रेलवे में इतिहास रचा।
- खेल के विभिन्न क्षेत्र - पी.वी. सिंधु → अंतरराष्ट्रीय बैडमिंटन खिलाड़ी, ओलंपिक पदक विजेता।  
- मैरी कॉम → प्रसिद्ध बॉक्सर, कई बार विश्व चैंपियन।
- व्यापार और प्रबंधन - इंद्रा न्यूयी → एक सफल व्यवसायी, पेप्सिको की पूर्व CEO।  
- किरण मजूमदार-शॉ → बायोकॉन कंपनी की संस्थापक।
- विज्ञान और तकनीक - कल्पना चावला → अंतरिक्ष यात्री, जिन्होंने अंतरिक्ष में भारत का नाम रोशन किया।  
- टेसी थॉमस → 'मिसाइल वुमन ऑफ इंडिया', रक्षा विज्ञान में बड़ा योगदान।

मेरी समझ के अनुसार अन्य कार्यक्षेत्र:

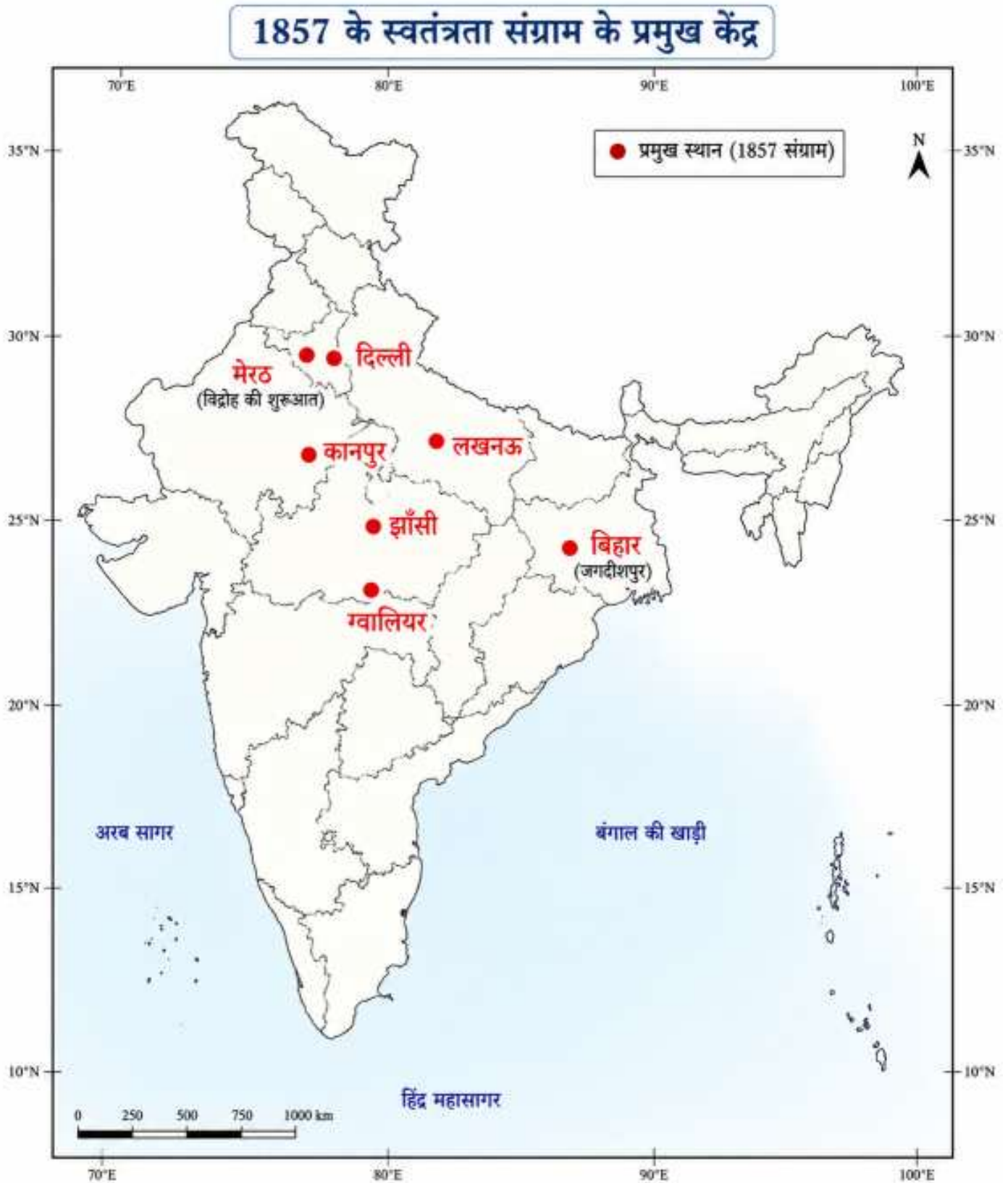
- राजनीति - इंदिरा गांधी → भारत की पहली महिला प्रधानमंत्री, जिन्होंने देश का सफल नेतृत्व किया।
- सेना - भावना कंठ → भारत की पहली महिला फाइटर पायलट, जिन्होंने वायुसेना में नई पहचान बनाई।
- पुलिस/प्रशासन - किरण बेदी → भारत की पहली महिला IPS अधिकारी, जिन्होंने पुलिस सेवा में महत्वपूर्ण योगदान दिया।
- साहित्य - महादेवी वर्मा → प्रसिद्ध हिंदी कवयित्री, जिन्होंने साहित्य में अमूल्य योगदान दिया।
- कला/संगीत - लता मंगेशकर → भारत की प्रसिद्ध गायिका, जिन्हें 'स्वर कोकिला' कहा जाता है।

4. कविता में 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से संबंधित अनेक स्थानों के नाम आए हैं। अपने शिक्षक की सहायता से दिए गए मानचित्र में उन स्थानों/नगरों को चिह्नित करके नाम लिखिए।



स्रोत— [https://surveyofindia.gov.in/UserFiles/files/1\\_16-state%20boundary.pdf](https://surveyofindia.gov.in/UserFiles/files/1_16-state%20boundary.pdf)

उत्तर:



## भाषा से संवाद

### व्याकरण की बात

#### बशब्द एक अर्थ अनेक

1. "कानपूर के नाना की मुँहबोली बहन 'छबीली' थी"

उपर्युक्त पंक्ति में रेखांकित शब्द पर ध्यान दीजिए। कविता में 'नाना' शब्द 'नाना धुंधूपंत' के लिए प्रयुक्त हुआ है। लेकिन इस शब्द का प्रयोग संदर्भ के अनुसार अन्य अर्थों में भी होता है। जैसे— माता के पिता के लिए तथा अनेक के अर्थ में। इस प्रकार अनेकार्थी शब्द वह शब्द है जिसके एक से अधिक अर्थ होते हैं। नीचे तालिका में दी गई कविता की पंक्तियों में रेखांकित शब्द अनेकार्थी शब्द हैं। कविता के संदर्भ में उनके सही अर्थ पर घेरा लगाइए।

काव्य-पंक्ति	अर्थ
<ul style="list-style-type: none"> <li>• तीर चलाने वाले <u>कर</u> में उसे चूड़ियाँ कब भाई</li> <li>• रानी विधवा हुई हाय! <u>विधि</u> को भी नहीं दया आई</li> <li>• रानी ने तलवार खींच ली, हुआ द्वंद्व <u>असमानों</u> में</li> <li>• हो मदमाती विजय, मिटा दे <u>गोलों</u> से चाहे झाँसी</li> <li>• मिला <u>तेज</u> से तेज, तेज की वह सच्ची अधिकारी थी</li> </ul>	<p>नदी का किनारा, बाण, हाथ (सीसा)</p> <p>शास्त्र में लिखी व्यवस्था, प्रणाली, विधाता, तरीका</p> <p>युद्ध, संशय, जो बराबर न हों (युग्म)</p> <p>किसी पदार्थ का गोल पिंड, रस्सी/सूत/बर्फ का गोला, तोप से दागने वाले गोले, नारियल</p> <p>आभा (दिव्य प्रकाश), गति, तेज चाकू (धार)</p>

उत्तर:

काव्य-पंक्ति	रेखांकित शब्द	कविता के संदर्भ में सही अर्थ
- तीर चलाने वाले <u>कर</u> में उसे चूड़ियाँ कब भाई	- कर	- हाथ (यहाँ 'कर' का अर्थ रानी के हाथों से है)
- रानी विधवा हुई हाय! <u>विधि</u> को भी नहीं दया आई	- विधि	- विधाता (ईश्वर / भाग्य) (यहाँ 'विधि' का अर्थ नियति या भाग्य से है)
- रानी ने तलवार खींच ली, हुआ द्वंद्व <u>असमानों</u> में	- असमानों	- जो बराबर न हों (यहाँ वॉकर और रानी के बीच असमान युद्ध की बात है)
- हो मदमाती विजय, मिटा दे <u>गोलों</u> से चाहे झाँसी	- गोलों	- तोप से दागने वाले गोले (अंग्रेजी सेना के बारूद और तोप के गोले)
- मिला <u>तेज</u> से तेज, तेज की वह सच्ची अधिकारी थी	- तेज	- आभा (दिव्य प्रकाश) (रानी की आत्मा का दिव्य प्रकाश अग्नि के प्रकाश में मिल गया)

2. “कानपुर के नाना की मुँहबोली बहन ‘छबीली’ थी”

“मेरठ, कानपुर, पटना ने भारी धूम मचाई थी”

उपर्युक्त पंक्तियों में रेखांकित शब्दों की वर्तनी पर ध्यान दीजिए। दोनों शब्दों की वर्तनी में थोड़ी भिन्नता है। कई बार रचनाकार कविता की लय, अर्थ की लय इत्यादि को ध्यान में रखते हुए भाषा के स्तर पर इस प्रकार का प्रयोग करते रहे हैं। इस कविता में अन्य शब्दों के भी ऐसे प्रयोग मिलते हैं, उन्हें ढूँढ़कर लिखिए और कक्षा में चर्चा कीजिए।

इसी पाठ्यपुस्तक की अन्य कविताओं में भी आपने ऐसा प्रयोग देखा होगा। जहाँ किसी शब्द की मानक वर्तनी से भिन्न वर्तनी का प्रयोग किया गया है। अपने शिक्षक के साथ इस विषय पर चर्चा कीजिए। चर्चा से उभरे बिंदुओं को लिखकर उन पर अपने शिक्षक के साथ पुनः चर्चा कीजिए कि ऐसे प्रयोग क्यों किए गए हैं?

उत्तर: इस कविता में कई स्थानों पर शब्दों की वर्तनी (spelling) में हल्का परिवर्तन किया गया है ताकि काव्य की लय, तुक, प्रवाह और भाव-गहराई बनी रहे। ऐसे प्रयोग काव्य भाषा को अधिक प्रभावशाली बनाते हैं।

- कविता में ऐसे अन्य उदाहरण:
  - फिरंगी (विदेशी के लिए सामान्य बोलचाल का रूप)
  - हरबोलों (हरबोले का बहुवचन रूप)
  - बिरानी / बिराना (वीरान का काव्यात्मक रूप)
  - कालगति (सामान्य भाषा से थोड़ा काव्यात्मक प्रयोग)
  - विरुदावली (विरुदावली का काव्य-शैली में प्रयोग)
  - मदमाती / मदमाता (भिन्न रूपों का प्रयोग भाव को गहराई देने के लिए)
- इस प्रकार के प्रयोग क्यों किए जाते हैं?
  - कविता की लय और तुकबंदी बनाए रखने के लिए
  - भावों को अधिक प्रभावशाली और संगीतात्मक बनाने के लिए
  - शब्दों में देशज और लोकभाषा की झलक दिखाने के लिए
  - पाठक के मन में चित्रात्मक प्रभाव उत्पन्न करने के लिए
  - कविता को अधिक सरल, सहज और जन-भाषा के निकट बनाने के लिए

### मुहावरे

- “दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी”

उपर्युक्त पंक्ति में ‘दृढ़ निश्चय करने’ के अर्थ को व्यक्त करने के लिए ‘मन में ठान लेना’ वाक्यांश का प्रयोग हुआ है जो एक मुहावरा है। ‘मुहावरे’ ऐसे वाक्यांश होते हैं जो अपने शाब्दिक अर्थ से भिन्न एक विशेष और लाक्षणिक अर्थ व्यक्त करते हैं। इनके प्रयोग से भाषा में सौंदर्य और प्रभाव उत्पन्न होता है।

पाठ में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। उन पंक्तियों में आए मुहावरे ढूँढ़कर लिखिए और उन मुहावरों का प्रयोग करते हुए नए वाक्य भी बनाइए। आपकी सुविधा के लिए एक उदाहरण दिया गया है।

काव्य पंक्ति	प्रयुक्त मुहावरा	नया वाक्य
1. अबके जनरल स्मिथ सम्मुख था, उसने मुँह की खाई थी	मुँह की खाना	मोहन ने सोचा था कि वह आसानी से जीत जाएगा लेकिन अंत में उसे मुँह की खानी पड़ी।
2. डलहौजी ने पैर पसारे अब तो पलट गई काया		
3. राजाओं नवाबों को भी उसने पैरों ठुकराया		
4. हुआ यज्ञ प्रारंभ उन्हें तो सोई ज्योति जगानी थी		
5. मेरठ, कानपुर, पटना ने भारी धूम मचाई थी		

उत्तर:

काव्य पंक्ति	प्रयुक्त मुहावरा	नया वाक्य
1. अबके जनरल स्मिथ सम्मुख था, उसने मुँह की खाई थी	- मुँह की खाना	- मोहन ने सोचा था कि वह आसानी से जीत जाएगा लेकिन अंत में उसे मुँह की खानी पड़ी।
2. डलहौजी ने पैर पसारे अब तो पलट गई काया	- पैर पसारना	- धीरे-धीरे कंपनी ने पूरे देश में अपने पैर पसार लिए।
3. राजाओं नवाबों को भी उसने पैरों ठुकराया	- पैरों ठुकराना	- उसने लालच में आकर अपने पुराने मित्रों को पैरों ठुकरा दिया।
4. हुआ यज्ञ प्रारंभ उन्हें तो सोई ज्योति जगानी थी	- सोई ज्योति जगाना	- महापुरुषों के विचारों ने युवाओं में राष्ट्रभक्ति की सोई ज्योति जगा दी।
5. मेरठ, कानपुर, पटना ने भारी धूम मचाई थी	- भारी धूम मचाना	- शादी के समारोह में बच्चों ने भारी धूम मचाई।

### सृजन

1. लक्ष्मीबाई की सखियों काना तथा मंदरा की ओर से लक्ष्मीबाई को एक पत्र लिखिए जिसमें काना तथा मंदरा द्वारा ब्रिटिश हुकूमत के विरुद्ध युद्ध की रणनीति पर चर्चा की गई हो।

उत्तर:

महारानी लक्ष्मीबाई जी,

सादर चरण स्पर्श।

हम आपकी सखियाँ काना और मंदरा, आगामी युद्ध की स्थिति को ध्यान में रखते हुए कुछ रणनीतिक सुझाव प्रस्तुत कर रही हैं।

हमारा विचार है कि अंग्रेज़ सेना को सीधे खुले मैदान में रोकना कठिन होगा, क्योंकि उनके पास आधुनिक हथियार और अधिक सैनिक बल है। इसलिए हमें झाँसी के किले की सुरक्षा को मजबूत करना चाहिए तथा चारों ओर से छोटी-छोटी टुकड़ियों द्वारा आक्रमण की नीति अपनानी चाहिए।

हम सुझाव देते हैं कि दुर्ग के भीतर भोजन, जल और युद्ध सामग्री का पर्याप्त संग्रह किया जाए ताकि लंबे समय तक घेरा सहा जा सके। साथ ही, स्थानीय लोगों को भी संगठित कर गुप्त रूप से समर्थन प्राप्त किया जाए।

यदि आवश्यक हो तो शत्रु को भ्रमित करने के लिए रात्रि-आक्रमण और छापामार युद्ध (गुरिल्ला युद्ध) की रणनीति अपनाई जाए।

हम आशा करती हैं कि आप इन सुझावों पर विचार करेंगी और उचित निर्णय लेंगी।

आपकी सखियाँ

काना एवं मंदरा

2. युद्धपूर्व रात्रि में झाँसी की रानी के मन में अगले दिन की संभावनाओं को लेकर कई तरह के भाव और विचार उठ रहे होंगे। आपके जीवन में भी कई ऐसे क्षण आए होंगे जब आपने मानसिक ऊहापोह का अनुभव किया होगा। ऐसी किसी घटना के विषय में अपनी डायरी में लिखिए, जैसे— परीक्षा के एक दिन पूर्व की स्थिति या नौवीं कक्षा में पहला दिन आदि।

उत्तर: डायरी लेखन —

दिनांक: (अपनी तारीख लिखें)

आज का दिन मेरे मन में बहुत हलचल लेकर आया है। कल मेरी परीक्षा है और मैं थोड़ा चिंतित महसूस कर रही हूँ। कभी लगता है कि मैंने सब पढ़ लिया है, तो कभी डर लगता है कि कहीं कुछ भूल न जाऊँ।

मैंने बार-बार किताबें देखीं, नोट्स पढ़े और याद करने की कोशिश की, लेकिन मन स्थिर नहीं हो रहा था। फिर मैंने थोड़ी देर आराम किया और गहरी साँसें लेकर खुद को शांत करने की कोशिश की।

अब मुझे समझ में आ रहा है कि घबराने से कुछ नहीं होगा, बल्कि आत्मविश्वास और शांत मन से ही सफलता मिलती है। मैंने तय किया है कि मैं पूरी मेहनत और विश्वास के साथ परीक्षा दूँगी।

आज का अनुभव मुझे यह सिखा गया कि मानसिक शांति भी उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी पढ़ाई।

## गतिविधियाँ

- शौर्य के समाचार

यह कविता रानी लक्ष्मीबाई के जीवन की घटनाओं, उनकी वीरता और पराक्रम से हमारा साक्षात्कार कराती है। कविता में वर्णित घटनाओं को एक समाचार-वाचक की तरह समाचार के रूप में प्रस्तुत कीजिए।

(संकेत— “आज झाँसी की रणभूमि पर रानी लक्ष्मीबाई ने अपनी अद्भुत वीरता और शौर्य का परिचय दिया...।”)

उत्तर: आज का विशेष समाचार —

झाँसी रणभूमि से

आज झाँसी की रणभूमि पर रानी लक्ष्मीबाई ने अद्भुत वीरता और शौर्य का परिचय देते हुए शत्रु सेना को कड़ी चुनौती दी। अंग्रेज़ी सेना के भारी दबाव के बावजूद रानी ने अपने साहस और युद्ध-कौशल से सभी को चकित कर दिया।

सूत्रों के अनुसार, रानी लक्ष्मीबाई ने घोड़े पर सवार होकर स्वयं युद्ध का नेतृत्व किया और अपनी तलवार से शत्रु सेना पर जोरदार प्रहार किया। उनके साथ वीर सखियों काना और मंदरा ने भी युद्धभूमि में साहसपूर्वक भाग लिया और शत्रु को पीछे हटने पर मजबूर कर दिया।

युद्ध के दौरान रानी ने झाँसी की रक्षा के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा दी और यह सिद्ध कर दिया कि भारतीय नारी भी किसी से कम नहीं है। उनकी वीरता ने स्वतंत्रता संग्राम की भावना को और अधिक प्रबल कर दिया है।

स्थानीय जनता में उत्साह और देशभक्ति की लहर दौड़ गई है। लोग रानी लक्ष्मीबाई के शौर्य को नमन कर रहे हैं और उन्हें “झाँसी की शेरनी” के रूप में याद कर रहे हैं।

- ‘हरबोलों’ और हमारी कहानी

“बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी।”

‘हरबोला’ बुंदेलखंड क्षेत्र में रहने वाले लोकगायकों का एक समुदाय है जिन्होंने रानी लक्ष्मीबाई की वीरतापूर्ण गाथा को अपने गीतों के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाने का काम किया। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में लोकगायकों की एक लंबी और समृद्ध परंपरा रही है। इनके द्वारा गाए जाने वाले गीत सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक मूल्यों को संरक्षित करने का एक जीवंत माध्यम हैं। आपके क्षेत्र में अथवा आपकी भाषा में भी ऐसे लोकगायक और उनके द्वारा गाए जाने वाले देशभक्तिपूर्ण गीत अवश्य प्रचलित होंगे। ऐसे गीतों का एक संकलन तैयार कीजिए और कक्षा में साझा कीजिए।

उत्तर: मेरे क्षेत्र में भी लोकगायन की एक समृद्ध परंपरा है, जहाँ लोकगायक देशभक्ति, वीरता और सामाजिक मूल्यों से जुड़े गीत गाते हैं। ऐसे गीत पीढ़ी-दर-पीढ़ी मौखिक रूप से आगे बढ़ते हैं और हमारी संस्कृति को जीवित रखते हैं।

कुछ देशभक्तिपूर्ण लोकगीतों के विषय:

- रानी लक्ष्मीबाई की वीरता की कथाएँ
- 1857 की क्रांति के वीर सेनानियों के गीत
- महात्मा गांधी और स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े भजन
- गाँव और मातृभूमि की महिमा के गीत
- सैनिकों के साहस और बलिदान के गीत

उदाहरण (लोकगीत शैली):

“माँ भारती के लाल उठी, अब समय पुकार रहा है,

झाँसी की रानी जैसा हर दिल ललकार रहा है।”

निष्कर्ष: लोकगायक हमारी संस्कृति के सच्चे संरक्षक हैं। वे गीतों के माध्यम से इतिहास, संस्कृति और देशभक्ति की भावना को जीवित रखते हैं। ऐसे गीत हमें अपनी जड़ों से जोड़े रखते हैं और देशप्रेम की भावना को मजबूत करते हैं।

### भाषा संगम

“कानपूर के नाना की मुँहबोली बहन ‘छबीली’ थी।”

नीचे ‘बहन’ शब्द के लिए संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित कुछ भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त शब्दों की सूची दी गई है।

बहन (हिंदी); भगिनी, स्वसृ: (संस्कृत); भैण (पंजाबी); बहन, हमशीरा (उर्दू); बैनी (कश्मीरी); भेण (सिंधी); बहीण (मराठी); बहेन (गुजराती); भयण (कोंकणी); बैनी, दीदी (नेपाली); बोन, भगिनी (बांग्ला); भनी, बाइ, बाइदेउ (असमिया); मचन, मनाओ (मणिपुरी); भउणी (ओड़िया); अक्क, चेल्लेलु (तेलुगु); तंगै, अक्का (तमिल); सहोदरि, पेड्डुळ् (मलयालम); सोदरि, अक्क, तंगि (कन्नड़)।

इनके अतिरिक्त यदि आप 'बहन' शब्द को किसी और भाषा में भी जानते हैं तो उस भाषा में भी लिखिए।

उपर्युक्त वाक्य को अपनी मातृभाषा में भी लिखिए।

<https://shabd.education.gov.in/lexicon.jsp>

उत्तर: अन्य भाषाओं में 'बहन' शब्द की सूची -

भाषा / बोली	'बहन' शब्द के रूप
- भोजपुरी	- बहिन, बहिनिया
- मैथिली	- बहिन, दीदी
- मारवाड़ी (राजस्थानी)	- बेन, बाई, बीरा की बेन
- गढ़वाली / कुमाऊँनी	- भुली, दीदी
- छत्तीसगढ़ी	- बहिनी
- हरियाणवी	- बेबे, वीर
- अंग्रेज़ी (English)	- सिस्टर (Sister)
- फ्रेंच (French)	- सोर (Sœur)
- स्पैनिश (Spanish)	- हरमाना (Hermana)

उपर्युक्त वाक्य का मातृभाषा में अनुवाद

मूल वाक्य (हिंदी): "कानपुर के नाना की मुँहबोली बहन 'छबीली' थी।"

(चूँकि आपकी मुख्य भाषा हिंदी है, इसलिए यहाँ हिंदी की कुछ प्रमुख क्षेत्रीय बोलियों और भारत की अन्य भाषाओं में इसका अनुवाद दिया जा रहा है। आप इनमें से अपनी पसंद/मातृभाषा के अनुसार कोई भी एक या दो चुनकर लिख सकते हैं):

- भोजपुरी में: "कानपुर के नाना के मुँहबोली बहिन 'छबीली' रहलीं।"
- मैथिली में: "कानपुरक नाना क मुँहबोली बहिन 'छबीली' छलीह।"
- मारवाड़ी (राजस्थानी) में: "कानपुर का नाना की मुँहबोली बेन 'छबीली' ही।"
- मराठी में: "कानपूरच्या नानांची मानलेली बहीण 'छबीली' होती."
- गुजराती में: "कानपूरना नानानी मानेली बहेन (मानेली बहेन) 'छबीली' हती."
- अंग्रेज़ी (English) में: "Chhabili was the foster sister of Nana of Kanpur."

## झरोखे से

कविता में लक्ष्मीबाई की दो सखियों 'काना' और 'मंदरा' का उल्लेख मिलता है जो युद्धक्षेत्र में अंत तक लक्ष्मीबाई के साथ रहीं। लक्ष्मीबाई की सहेलियों में ऐसी ही एक और वीरांगना का नाम आता है, जिनका नाम था 'झलकारी बाई'। इन्होंने भी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान बहुत ही वीरता के साथ अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ाई लड़ी। नीचे दिए गए लेख को पढ़कर आप 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में उनके योगदान के विषय में जान सकते हैं।

### झलकारी बाई

इतिहास के पन्नों में लुप्त, यह एक महान योद्धा की कहानी है जिसने 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के दौरान बहादुरी से लड़ाई लड़ी थी। एक सामान्य परिवार से ताल्लुक रखने वाली झलकारी बाई केवल अपनी दृढ़ता और साहस से प्रेरित थीं जो आगे चलकर एक आदरणीय योद्धा बनीं।

झलकारी बाई का जन्म 22 नवंबर 1830 को झाँसी के निकट भोजला गाँव में हुआ था। वह बड़ी होकर एक सैनिक और रानी लक्ष्मीबाई की विश्वसनीय सलाहकारों में से एक बन गईं। उन्होंने बहुत कम उम्र में ही घुड़सवारी, अस्त्र-शस्त्र की कला और एक योद्धा की तरह लड़ना सीख लिया था। उन्होंने अपने पति पूरन कोरी से तीरंदाजी, कुश्ती और निशानेबाजी भी सीखी। पूरन कोरी रानी लक्ष्मीबाई के पति राजा गंगाधर राव की सेना में एक सैनिक थे।



झलकारी बाई अक्सर अपने पति के साथ शाही महल जाया करती थीं। रानी लक्ष्मीबाई को उनकी बहादुरी के बारे में पता चलने के बाद, वे उनकी अच्छी सहेली बन गईं। झलकारी बाई का शारीरिक गठन और उनका चेहरा रानी लक्ष्मीबाई से मिलता-जुलता था।

जल्द ही, झलकारी बाई को रानी लक्ष्मीबाई की 'दुर्गा दल' नामक महिला सेना में पद मिल गया और वे अक्सर रानी की तरफ से महत्वपूर्ण निर्णय लिया करती थीं।

राजा गंगाधर राव के निधन के बाद, अंग्रेजों को उनका उत्तराधिकारी स्वीकार्य नहीं था, परंतु अंग्रेजों के विरोध के बावजूद, रानी लक्ष्मीबाई ने शासन की बागडोर संभालने का फैसला किया। लक्ष्मीबाई ने निकट भविष्य में होने वाली लड़ाई के लिए तैयारियाँ शुरू कर दीं। 1857 में, सिपाहियों का विद्रोह बढ़ गया और उत्तरी एवं मध्य भारत के बड़े हिस्सों में फैल गया। वे सिपाही रानी लक्ष्मी बाई का समर्थन करने के लिए एकत्र हुए। झलकारी बाई को सेना की महिला टुकड़ी का नेतृत्व करने की जिम्मेदारी सौंपी गई।

1858 में जब जनरल सर ह्यू रोज की कमान में अंग्रेजी सेना ने झाँसी के किले पर हमला किया और किले को घेर लिया तो झलकारी बाई और पूरन कोरी दोनों ने उसका कड़ा प्रतिरोध किया। झलकारी बाई ने जमकर लड़ाई लड़ी और रानी को अपने बच्चे के साथ महल छोड़ने का सुझाव दिया।

झलकारी बाई ने स्वयं रानी लक्ष्मीबाई का वेश धारण किया, सेना की कमान संभाली और अंग्रेजों से लड़ाई लड़ी। उनकी सरूपता ने अंग्रेजों को भ्रमित किए रखा और उनकी यह चाल लंबे समय तक काम करती रही। झलकारी बाई की असली पहचान के बारे में अंग्रेज अनिश्चित थे और उनकी वजह से ही रानी लक्ष्मीबाई अपने बेटे के साथ अपने महल से भाग सकीं।

हालाँकि उसी लड़ाई में, पूरन कोरी अंग्रेजों से लड़ते हुए मारे गए और जब झलकारी बाई ने यह सुना तो वह क्रोधित हो गईं। उन्होंने कई अंग्रेज सैनिकों को मार डाला और उनसे जमकर लड़ाई लड़ी।

झलकारी बाई की यह कहानी बुंदेलखंड की लोक स्मृति का एक हिस्सा है। आज तक, उनकी स्मृति लोगों के मन में जीवित है और उनके बहादुर करतब वहाँ की लोककथाओं में बार-बार उभर कर सामने आते हैं। उनके सम्मान में हर साल झलकारी बाई जयंती मनाई जाती है। 'अमर शहीद' झलकारी बाई 1890 तक जीवित रहीं और वे अपने समय की शौर्य की प्रतिमूर्ति बन गई थीं।

- साभार : <https://indianculture.gov.in/hi/node/2790247>

उत्तर: पाठ्यपुस्तक के 'झरोखे से: झलकारी बाई' लेख के आधार पर, कक्षा में चर्चा और मुख्य बिंदुओं को अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखने के लिए एक सुव्यवस्थित सारांश और प्रश्नोत्तर नीचे दिए गए हैं।

यह सामग्री विद्यार्थियों को झलकारी बाई के अदम्य साहस और 1857 की क्रांति में उनकी ऐतिहासिक भूमिका को समझने में मदद करेगी:

मुख्य बिंदु: झलकारी बाई का परिचय और योगदान

- जन्म और प्रारंभिक जीवन: झलकारी बाई का जन्म 22 नवंबर 1830 को झाँसी के पास भोजला गाँव में एक साधारण परिवार में हुआ था। उन्होंने बचपन में ही अस्त्र-शस्त्र चलाना और घुड़सवारी सीख ली थी।
- दुर्गा दल का नेतृत्व: लक्ष्मीबाई की शक्ति से अत्यधिक समानता और उनकी बहादुरी के कारण रानी ने उन्हें अपनी महिला सेना 'दुर्गा दल' में शामिल किया, जहाँ वे महत्वपूर्ण निर्णय लेती थीं।
- ऐतिहासिक चाल (अंग्रेजों को भ्रमित करना): 1858 में जब जनरल ह्यू रोज़ ने झाँसी के किले को घेरा, तब झलकारी बाई ने रानी लक्ष्मीबाई का वेश धारण कर सेना की कमान संभाल ली। इससे अंग्रेज भ्रमित हो गए और रानी अपने पुत्र दामोदर राव के साथ सुरक्षित किले से बाहर निकल सकीं।
- अंतिम समय तक संघर्ष: पति पूरन कोरी के शहीद होने के बाद भी वे विचलित नहीं हुईं और अत्यंत वीरता से लड़ते हुए 1890 तक जीवित रहीं तथा बुंदेलखंड की लोककथाओं में अमर हो गईं।

लेख पर आधारित महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

1. झलकारी बाई का चेहरा और शारीरिक गठन रानी लक्ष्मीबाई की किस प्रकार मदद कर सका?

उत्तर: झलकारी बाई का चेहरा और कद-काठी रानी लक्ष्मीबाई से बहुत मिलती-जुलती थी। जब अंग्रेजों ने झाँसी के किले को चारों तरफ से घेर लिया, तब झलकारी बाई ने रानी की वेशभूषा धारण कर ली और खुद को रानी बताकर अंग्रेजों से युद्ध किया। इस समानता के कारण अंग्रेज लंबे समय तक भ्रमित रहे और इसी बीच असली रानी लक्ष्मीबाई अपने बेटे के साथ किले से सुरक्षित बाहर निकलने में सफल रहीं।

2. झलकारी बाई के पति कौन थे और उनका 1857 की क्रांति में क्या योगदान था?

उत्तर: झलकारी बाई के पति का नाम पूरन कोरी था, जो झाँसी के राजा गंगाधर राव की सेना में एक वीर सैनिक थे। उन्होंने झलकारी बाई को तीरंदाजी, निशानेबाजी और कुश्ती सिखाई थी। 1858 में अंग्रेजों के आक्रमण के दौरान पूरन कोरी ने किले की रक्षा के लिए कड़ा प्रतिरोध किया और वीरतापूर्वक लड़ते हुए वीरगति प्राप्त की।

3. रानी लक्ष्मीबाई की महिला टुकड़ी (सेना) का क्या नाम था और झलकारी बाई की उसमें क्या भूमिका थी?

उत्तर: रानी लक्ष्मीबाई की महिला सेना का नाम 'दुर्गा दल' था। झलकारी बाई न केवल इस दल की एक मुख्य सैनिक थीं, बल्कि वे रानी की विश्वसनीय सलाहकार भी थीं। 1857 के विद्रोह के समय उन्हें इस महिला टुकड़ी का नेतृत्व (कमान) सौंपने की बड़ी जिम्मेदारी दी गई थी।

4. "झलकारी बाई बुंदेलखंड की लोक स्मृति का हिस्सा हैं" — इस पंक्ति से क्या तात्पर्य है?

उत्तर: इस पंक्ति का तात्पर्य यह है कि भले ही मुख्यधारा के लिखित इतिहास के पन्नों में झलकारी बाई को वह स्थान न मिला हो जिसकी वे हकदार थीं, लेकिन बुंदेलखंड के आम लोगों ने उन्हें कभी नहीं भुलाया। आज भी वहाँ के लोकगीतों, लोककथाओं और कहानियों के माध्यम से उनकी बहादुरी के किस्से पीढ़ी-दर-पीढ़ी सुनाए जाते हैं और हर साल उनकी जयंती बड़े गर्व से मनाई जाती है।

कक्षा में चर्चा के लिए मुख्य बिंदु (बुलेट पॉइंट्स):

- सच्ची सहेली और देशभक्त: काना, मंदरा और झलकारी बाई जैसी सखियाँ यह दर्शाती हैं कि रानी लक्ष्मीबाई के पास केवल सैनिक नहीं, बल्कि प्राण न्योछावर करने वाले वफादार साथी थे।
- नारी शक्ति का प्रतीक: यह लेख सिद्ध करता है कि 1857 की क्रांति में महिलाओं ने केवल पुरुषों का सहयोग नहीं किया, बल्कि अग्रिम मोर्चे पर आकर सेनाओं का नेतृत्व भी किया था।

## खोजबीन

नीचे दी गई इंटरनेट कड़ियों तथा पुस्तकों के माध्यम से आप लक्ष्मीबाई तथा भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की अन्य वीरांगनाओं और राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार से सम्मानित बालिका क्रांति के अदम्य साहस के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं—

<https://www.naidunia.com/chhattisgarh/ambikapur-national-bravery-award-sevenyearold-kanti-of-chhattisgarh-who-saves-her-sister-from-elephants-will-get-national-bravery-award-4677447>

[https://youtu.be/nyoqcOrlWPw?si=JT63xysbj\\_qgstCC](https://youtu.be/nyoqcOrlWPw?si=JT63xysbj_qgstCC) - NCERT OFFICIAL

‘भारत की महान नारियाँ’ श्रृंखला की पुस्तकें, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित

उत्तर: इस अंतिम खंड में दी गई इंटरनेट कड़ियों, वीडियो और पुस्तकों के संदर्भों के आधार पर छत्तीसगढ़ की साहसी बालिका क्रांति तथा स्वतंत्रता संग्राम की अन्य वीरांगनाओं के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी और निष्कर्ष नीचे दिए गए हैं:

1. राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार विजेता: सात वर्षीय बालिका 'क्रांति' का अदम्य साहस

- वेबसाइट (NaiDunia) की कड़ी के अनुसार, छत्तीसगढ़ के अंबिकापुर (सरगुजा क्षेत्र) की रहने वाली मात्र सात वर्ष की नन्हीं बालिका क्रांति ने जो साहस दिखाया, वह देश के लिए एक मिसाल है:
- घटना का विवरण: क्रांति और उसकी दो साल की छोटी बहन अपने घर के पास खेल रही थीं, तभी वहाँ अचानक जंगली हाथियों का एक दल आ पहुँचा। हाथियों को देखकर आसपास के लोग और परिवार वाले डरकर अपनी जान बचाने के लिए भागने लगे।
- अदम्य साहस: संकट की इस घड़ी में क्रांति ने अपनी जान की परवाह न करते हुए गज़ब की सूझबूझ दिखाई। वह पीछे नहीं हटी और अपनी दो वर्षीय छोटी बहन को गोद में उठाकर हाथियों के सामने से सुरक्षित निकाल ले गई।
- सम्मान: इस असाधारण वीरता और सूझबूझ के लिए भारत सरकार द्वारा गणतंत्र दिवस के अवसर पर उसे राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार (National Bravery Award) से सम्मानित किया गया।

## 2. NCERT OFFICIAL वीडियो संदर्भ (झाँसी की रानी और वीरांगनाएँ)

यूट्यूब की दी गई कड़ी (<https://youtu.be/nyoqcOriWPw>) के माध्यम से विद्यार्थी और शिक्षक रानी लक्ष्मीबाई के जीवन, उनके युद्ध कौशल और 1857 की क्रांति पर आधारित दृश्य-श्रव्य (Audio-Visual) माध्यम से गहन समझ विकसित कर सकते हैं।

यह वीडियो कविता की विभिन्न पंक्तियों को ऐतिहासिक चित्रों, नक्शों और सरल व्याख्या के साथ प्रस्तुत करता है, जिससे विद्यार्थियों को निम्नलिखित विषयों को समझने में आसानी होती है:

- झाँसी की भौगोलिक स्थिति और उस समय का परिवेश।
- रानी लक्ष्मीबाई का सैन्य संगठन (जैसे दुर्गा दल, काना, मंदरा और झलकारी बाई की भूमिका)।
- प्रथम स्वतंत्रता संग्राम (1857) के विभिन्न घटनाक्रम।

## 3. 'भारत की महान नारियाँ' पुस्तक श्रृंखला

प्रकाशन विभाग (Publication Division), नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित यह पुस्तक श्रृंखला बच्चों और शोधकर्ताओं के लिए एक अनमोल धरोहर है। इस श्रृंखला के माध्यम से हम निम्नलिखित वीरांगनाओं के बारे में और अधिक विस्तार से पढ़ सकते हैं:

- रानी लक्ष्मीबाई (झाँसी): जिन्होंने अंग्रेजों की हड़प नीति के खिलाफ युद्ध का शंखनाद किया।
- झलकारी बाई: जिन्होंने अपनी शक्ति की समानता का उपयोग कर रानी की रक्षा की और खुद मोर्चे पर लड़ते हुए शहीद हुईं।
- बेगम हज़रत महल (लखनऊ): जिन्होंने लखनऊ में 1857 की क्रांति का कुशल नेतृत्व किया।
- रानी चन्नम्मा (किन्नूर): जिन्होंने अंग्रेजों की दमनकारी नीतियों के विरुद्ध डलहौजी से भी पहले हथियार उठाए थे।

पाठ का निष्कर्ष (साझा सीख):- यह अध्याय हमें सिखाता है कि "शौर्य और साहस किसी उम्र, लिंग या वर्ग के मोहताज नहीं होते।" जहाँ 1857 में रानी लक्ष्मीबाई और झलकारी बाई ने अपनी मातृभूमि के लिए प्राण न्योछावर किए, वहीं आज के आधुनिक समय में 'क्रांति' जैसी नन्हीं बालिकाएँ अपनी त्वरित सूझबूझ और निडरता से वीरता की इसी मशाल को आगे बढ़ा रही हैं।